12.10 hrs

COMMITTEE ON PUBLIC UNDERTAKINGS

Sixty-second Report and Minutes

SHRI MADHUSUDAN VAIRALE (Akola) : I beg to present the Sixty-second Report (Hindi and English versions) of the Committee on Public Undertakings on Cotton Corporation of India Limited and Minutes of the sittings of the Committee relating thereto.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

Reported functioning of office of so-called Khalistan Council in Harminder Sahib, Amritsar and reaction of Government thereto.

श्री मनीराम बागड़ी (हिसार) : अध्यक्ष महोदय, अबिलंबनीय लोक महत्व के निम्न-लिखित विषय की ओर गृह मंत्री जी का ध्यान दिलाता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वे इस बारे में एक वक्तव्य दें :—

"हरमिन्दर साहिब, अमृतसर में तथाकथित खालिस्तान कौंसिल के कार्यालय के कार्यकरण के समाचार और उसके संबंध में सरकार की प्रतिक्रिया।"

THE MINISTER OF HOME AFFAIRRS (SHRI P.C. SETHI) : Sir, as the House is aware, the "National Council of Khalistan" and "Dal Khalsa" were declared as unlawful associations and banned under the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 on the 1st May 1982 for indulging in secessionist activities. Government of Punjab, thereafter took steps to deal with their activists. 162 activists have been arrested in 59 cases registered against them up to 31st March, 1983. According to Government of Punjab, Balbir Singh Sandhu, self styled Secretary General of National Council of Khalistan and a proclaimed offender is reported to be living at Guru Nanak Niwas in the Golden Temple, Amritsar. It is alleged that the room occupied by him is also being used as temporary headquarter of the so-called Secretary General of National Council of Khalistan. This fact is under verification, which has been rendered difficult as investigating agencies are not being permitted to enter Guru Nanak Niwas. Balbir Singh Sandhu is wanted in five cases and had been declared a proclaimed offender.

The Government have been receiving information of some Dal Khalsa activists taking shelter in Guru Nanak Niwas, Amritsar. It is reported that the State Authorities have been approaching the SGPC to hand over such persons to them but in vain.

In the meetings held with the leaders of Shiromani Akali Dal, a request was made to them that Gurdwaras should not be used as sanctuary for those indulging in illegal activities. It is unfortunate that SGPC and Shiromani Akali Dal leadership have not denounced such activities.

As I have stated in this House earlier, the entry of police in places of worship is not prohibited by law, but in deference to religious sentiments, the Government has exercised restraint. Government hopes and trusts that SGPC and Shiromani Akali Dal will realise their national responsibility and extend their cooperation and take steps to surrender to the police or court the proclaimed offender Balbir Singh Sandu. I assure the House that the Government is keeping a close watch on Dal Khalsa activists and all steps are being taken to preserve the unity and integrity of the country.

श्री मनीराम बागड़ी (हिसार) : अध्यक्ष जी, यह बहुत ही नाजुक सवाल है। इसको पर मंत्री जी ने इस आसानी से अपने ऊपर से टाल दिया है जैसे किसी दूसरे का सवाल हो और इससे सुलटना नहीं पड़ेगा। मैं इस सवाल को

शुरू करने से पहले दो बातें कहना चाहूंगा। दशमेश पिता गुरु गोबिन्द सिंह की पहली तप भूमि हेमकुण्ड थी, जन्म—पटना साहब, कर्म-भूमि आनन्दपुर साहब, यज्ञ था नैनादेवी चंडीगढ़ और नाण्देड़ साहब हुज़ूर साहब में देह त्याग की। सिखी किसको कहते हैं "काज पराया जान अपनी"। काश्मीर से और देश से मज़लूम लोग गए। दशमेश की उम्र चार साल थी, जब उन्होंने संरक्षण मांगा। तो, उन्होंने कहा कि जाइए पिताजी आप हमारी चिन्ता मत करिए "जान आपकी और कार्य पराया"। अपने साहबज़ादों को किले से निकाला और कहा जाओ शहीदी दो—जान अपनी-काज पराया। खुद गुरू साहब ने देह त्याग की। आज गुरू महाराज और सिखी का दिन है। हुज़ूर साहब, हेमकुण्ड, पटना साहब और चंडीगढ़, इनको जोड़ने का नाम सिखी है। जो भारत के टुकड़े करने की बात करते हैं, वे सिख नहीं। वे गुरू गोबिन्द सिंह के देश के और इस देश के गद्दार हैं, इस बात को मानकर चलना पड़ेगा। अध्यक्ष जी, मैं गृह मंत्री जी का ध्यान दिलाना चाहता हूं देश ही नहीं दुनिया है गुरूओं के लिये। इसका मतलब यह नहीं है कि मैं राम का नाम लेकर पाप करूं, कृष्ण का नाम लेकर पाप करूं, हजरत मोहम्मद का नाम लेकर पाप करूं, महात्मा गांधी का नाम ले कर पाप करूं, और दशमेश पिता का नाम लेकर बेकसूर लोगों की हत्या करूं, कहीं कत्लेआम करूं, कहीं बमों का इस्तेमाल करूं और देश के टुकड़े करूं। याद रखना यह सवाल फिर देश और विदेश का आ जाता है। बाबा नानक के सामने मानवता थी, देश और विदेश नहीं था। वह सारे संसार में घूमे। जो सिख के सवाल पर बात करते हैं उनसे मेरा कहना है कि हिन्दू और सिख में नफ़रत नही है। जो सिख और हिन्दू धर्म के अलगाव की बात करते हैं, मैं उसको नहीं मानता हूं। ब्राह्मण और बनिया अलग हैं, शायद कोई और जाति बिरादरी के नाम पर अलग हों। लेकिन हिन्दू और सिख अलग नहीं हैं। मेरी रिश्तेदारी हिन्दूओं के अन्दर है, जाट हिन्दू की जाट सिख के साथ आम रिश्तेदारी है, ब्राह्मण हिन्दू की ब्राह्मण सिख के साथ आम रिश्तेदारी है, खत्री हिन्दू की खत्री सिख के साथ आम रिश्तेदारी है। ब्राह्मण की और जाट की रिश्तेदारी नहीं है, यादव की और जाट की शायद रिश्तेदारी न हो। लेकिन हिन्दू और सिख की आम रिश्तेदारी है। यह धर्म की दीवार रिश्तेदारी नहीं तोड़ सकती है। वह देश द्रोही है जो इस दीवार को, भाई भाई को तोड़ना चाहता है और इस देश के अन्दर बटवारे की दीवार बनाना चाहता है। लेकिन वह इस देश के लोग नहीं हैं। इस देश को तोड़ने वाला इस देश का नहीं है। यह दिमाग देशी नहीं; बल्कि विदेशी है जिसने हिन्दू और मुसलमान को तोड़ा है वह दिमाग परदेशी है। एक हिन्दुस्तान में लड़ने वाले, एक हिन्दुस्तान को मानने वाले, उसको तोड़ने वाला दिमाग अंग्रेज का दिमाग था। और आज यह खालिस्तान का दिमाग जो उसकी बात करता है वह दिमागी तौर पर या असली तौर पर अंग्रेज है या अंग्रेज की औलाद है, अमरीकन है या अमरीका की औलाद है। यह विदेशी दिमाग यहां पर चल रहा है और विदेशी शक्ति चल रही है, इस बात को हमें समझ लेना चाहिये।

अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से अर्ज करना चाहता हूं वह दिमाग जिसने हिन्दुस्तान को तोड़ा वह अंग्रेज का दिमाग था जो चाहता था कि भारत के और टुकड़े कर दिये जायें। और नेता भी थे, ऐसी बात नहीं है कि नेता नहीं थे। नेता डा० अम्बेदकर थे उनको अंग्रेज फुसलाना चाहते थे, लेकिन उन्होंने कहा नहीं, भारत मेरा है, नहीं तोड़ा जा सकता है। उस वक्त नेता थे मास्टर तारा सिंह, संत फतेह सिंह

जो अंग्रेज की चाल में नहीं आये। लेकिन अंग्रेज की चाल अब काम कर रही हैं। इसके लिये मैं आपको ओर सरकार को दोष दिये बग़ैर नहीं रह सकता। जब खालिस्तान की बात यहां सदन में आयी तो सबसे पहले मैंने यहां पर सवाल उठाया, और उस वक्त गृह मंत्री ज्ञानी जी थे जो अब राष्ट्रपति हैं, मैं उनकी शान के खिलाफ कोई बात नहीं कहना चाहता। लेकिन वह वाक्य लिखा हुआ है। मैंने बहुत कोशिश की कि उनका वाक्य शुद्ध हो जाय क्योंकि आने वाली पीढ़ियां उसको पढ़ेंगी। यह लोक सभा में जो लिखा जा रहा है वह हमारी ही सम्पत्ति नहीं है, बल्कि आने वाली पीढ़ी की सम्पत्ति है, खुद कह बैठे दो अकालियों की लड़ाई थी, एक भिन्डरवाले की और दूसरे अकालियों की। भिन्डरवाला हमारे नज़दीक थे हमने भिन्डरवाला की मदद कर दी और भिन्डरवाला को ताकत कर दी। थे दोनों अकाली, लेकिन नज़दीक हमारे थे भिन्डरवाला। गृह मंत्री यह ब्यान दें। और अध्यक्ष महोदय यहीं तक नहीं, क्या कुछ नहीं किया गया, एक फसला हुआ जब हरियाणा और पंजाव बना। उस फैसले को लटकाया गया...

पानी के सवाल को लटकाया गया। जब एक फैसला हो गया, सन् 1976 का एवार्ड हो गया तो बार बार यह क्यों? मैं नहीं चाहता कि अपने भारत के अन्दर की सीमाओं को प्रान्तों और जिलों की सीमाओं को बलपूर्वक लिया जाये या दिया। जाये बल्कि उसके लिये कायदे कानुन, कमीशन और अदालतें होती हैं। जिस देश के अन्दर प्रान्तों में सीमाओं के झगड़ें तलवार और लाठियों से लिये जायें वह देश टूटा करता है और देश नहीं टूटे तो देश का दिमाग उससे पहले टूटा करता है।

जब यह सवाल सामने आया तो बाबूजी यहां मौजूद हैं, वह बहुत विद्वान हैं, उस वक्त हुकूमत में थे, इन्होंने साफ शब्दों में कह दिया था लेकिन इनकी बात किसी ने मानी नहीं। सन् 76 का एवार्ड हुआ, यहां पर सरकार ने फैसला दिया, रावी-व्यास के पानी का फैसला हुआ कि 75 लाख एकड़ फुट पानी हरयाणा की और 75 लाख एकड़ फुट पानी पंजाब को दिया जाये। राजस्थान तो बिल्कुल अलग पहले से ही कर दिया था, उसको खामाख्वाह घसीट रहे हैं। 100 करोड़ रूपया पाकिस्तान को दिया गया था ताकि पानी रोक सके और वह पानी जमीन में काम आ सके। मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि उस फैसले को रोका और लम्बा किया गया। सरकार ने उसे चलाया नहीं उसके बाद फिर प्रधान मंत्री ने एवार्ड दिया हरयाणा के लोगों के साथ अन्याय कर के। लेकिन चलो न्याय, अन्याय, एवार्ड क्यों दिया गया? उस समय हरयाणा मे इलैक्शन थे। उधर से एजीटेशन, इधर से लोगों की वोट मिले। उस एजीटेशन को प्रोत्साहित किस न की कि वहां अकाली पानी नहीं आने देते हैं, यहां हरयाणा वालों को तो पानी मिल रहा है, कांग्रेस को वोट के लिये।

मैं बड़े ताज्जुब से कहता हूं कि राष्ट्रपति के चुनाव में, जो आज यहां विरोध की बात करते हैं और भाई-भाई को आपस में लड़ाते हैं वोट कांग्रेस को देते हैं, वह लोग राजनीतिक लड़ाई कराते हैं। वोट देते हैं ज्ञानीं ज़ैलसिंह को राष्ट्रपति के चुनाव में और कांग्रेस पार्टी के लोग वोट लेने के लिये उनके नजदीक है और हिन्दू और सिख को लड़ाने के लिये बीच में से निकल जाते हैं।

मैं कहना चाहता हूं कि अभी भी वक्त है संभल जाओ। मैं मुबारकबाद देता हूं चौधरी चरणसिंह को जिन्होंने अकेले ने साफ बात कही थी। उसके बाद मोरारजी भाई ने साफ बात

कही। कुछ पार्टियों के दिमाग 3,4 जगह बंट गये। राजस्थान की पार्टी कहती है कि राजस्थान का फायदा हो, पंजाब की पार्टियां पंजाब की भाषा में बोलती हैं, हरियाणा की पार्टी हरियाणा की भाषा में बोलती हैं। आल इंडिया का लीडर हरयाणा में हरयाणा की बात कहता है, राजस्थान में राजस्थान की बात कहता है। इस 3 दिमाग की पार्टियों ने देश को टुकड़े करने की बात की है।

मैं कहूंगा कि मोरारजी भाई ने भी काम किया, बाबूजी ने भी साफ बात कही कि सीधे ढंग से चलो। एक तरफ आप कहते हैं कि इज्जत करता हूं, एहतराम करता हूं। मैं लौंग-वाला साहब से एक बात पूछना चाहता हूं, यहां दिलेरी की निहालसिंह वाला ने कि सही सिख वह है जो एक हिन्दू और मुसलमान की जान बचाने के लिये अपनी जिन्दगी दे दे, सही हिन्दू वह है जो एक मुसलमान और सिख की जिन्दगी बचाने के लिये अपनी जिन्दगी दे दे और सही मुसलमान वह है जो हिन्दू और सिख की जान बचाने के लिये अपनी जिन्दगी दे दे।

एक आदमी ने कहा कि भिंडरवाला साहब का बयान क्या निकलता है? जो आपको यह कहे कि पुलिस दाखिल हो उसको उड़ा दो, चरणसिंह को उड़ा दो, सारे देश को उड़ा दो। इस बात को कहने वाले कभी गुरु के आज्ञाकारी नहीं बन सकते।

अमृतसर की पवित्रता क्यों न हो, समूचे भारत की पवित्रता हो। अमृतसर की सबसे पहले हो। क्यों पियो बीड़ी-सिगरेट, शराब, क्यों करो अफीम की समग्लिंग और तस्करी, क्यों लोगों को कत्ल करो, डकैती करो? यह काम क्यों करो?

लेकिन एक ने कहा कि सिख खतरे में हैं। मैं हिन्दू, सिख और मुसलमानों में कोई फर्क नहीं मानता हूं। हिन्दुओं और सिखों की तो आपस में रिश्तेदारी है। लेकिन अगर आप कहते हैं कि उनके साथ अन्याय हो रहा है, तो मैं पूछना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान का राष्ट्रपति कौन है—ज्ञानी जैलसिंह। क्या वह सिख नहीं है? कौन है पार्लियामेंटरी एफेयर्ज का मिनिस्टर? ---श्री बूटा सिंह। वह सिख नहीं है क्या? और यह सरदार जी बैठे हैं, इनकी बिरादरी के लोग हिन्दू हैं, क्या यह सिख नहीं हैं? क्या सिख होने का परमिट वही लेकर आया है, जो लोगों को ज्यादा तबाह करे? जो हिन्दूओं और सिखों में प्यार पैदा करे, क्या वह सिख नहीं है? क्या श्री निहालसिंह वाला सिख नहीं हैं?

एक माननीय सदस्य : दिल्ली का मेयर सिख है।

एक माननीय सदस्य : बम्बई का मेयर सिख है।

श्री मनीराम बागड़ी : पंजाब का मुख्य मंत्री सिख है।

माइनारिटी की बात करने वालों से मैं कुछ कहना चाहता हूं। मैं नहीं चाहता था कि यह बात कहूं। अगर मुसलमान माइनारिटी की बात करते हैं, तो मैं उनसे कहता हूं कि अगर वे माइनारिटीज की मीटिंग बुलाएं, तो हिन्दुस्तान के कौने-कौने से सिखों को बुलाएं और जम्मू काश्मीर और पंजाब के हिन्दुओं को भी बुलाएं अगर सिख माइनारिटी की बात करते हैं, तो पंजाब में कौन माइनारिटी में है? —हिन्दू है। जम्मू-काश्मीर में माइनारिटी में कौन है?-हिन्दू हैं। अगर समूचे देश में माइनारिटीज को विश्वास दिलाना है तो हिन्दुओं, सिखों और मुसलमानों तीनों को विश्वास दिलाना होगा।

और हिन्दुओं, सिखों, मुसलमानों, इन तीनों को मिलाकर इस देश के हरिजनों और अछूतों को विश्वास दिलाना होगा, जिनको हज़ारों सालों से शूद्र कहा जाता रहा है और जिनको हज़ारों सालों से लोगों ने ठुकराया है।

मैं आपके माध्यम से गृह मंत्री से कहना चाहता हूं कि ढील से काम चलने वाला नहीं है। खुशामदीद, हरियाणा का कत्ल कीजिए, राजस्थान को मारिए, क्योंकि हम तलवार उठा नहीं सकते और न तलवार उठाएंगे। हम चाहेंगे कि अगर हमारे भाई भिंडरवाले को इससे खुशी होती हो तो वह चौधरी चरण सिंह के खून से अपने हाथ रंग लें। अगर उन्हें मेरे, श्री निहालसिंह वाला और कुछ मासूम बच्चों के खून की ज़रूरत है, तो ले लें। लेकिन वह 1947 के पाप को न भूलें। उस वक्त इस देश में कितनी अबलाओं की इज्ज़त चली गई। इस पापी फिरकापरस्त मनोवृत्ति ने इस देश को बहुत तबाह किया है। यह देश गांधी, गोतम ओर नानक का है।

मैं यह भी कहना चाहता हूं कि विदेशियों को इस मामले में न लाया जाए। सरकार बिल्कुल निश्चिन्त हो कर बैठी है। लन्दन में विलायत के लोग नाम-निहाद खालिस्तान के अध्यक्ष को टी०वी० पर बुलाते हैं। क्या है खालिस्तान ? एक पागलपन का नाम ओर देशद्रोहियों का एक गिरोह। हमारे एम्बैसेडर भी पागलों की तरह उसके मुकाबले में बैठ कर बात करने जाते हैं। क्या इस तरह सरकार चलेगी ?

संत लोंगोवाल कहते है कि हमने चौधरी चरणसिंह को खत नहीं लिखा, हम वायलैंस के रास्ते पर नहीं चलेंगे, हम खालिस्तान को नहीं मानेंगे, हम उसका विरोध करेंगे। क्या लोंगोवाल साहब में यह दिलेरी है कि वह कहें कि वह उन मुजरिमों को गुरुद्वारों में नहीं रहने देंगे ? मैं माफ नहीं करूंगा कातिल और डकैत को, लेकिन एक कातिल और एक डकैत से कई हजार गुना ज्यादा मुजरिम वे आदमी हैं, जो कातिलों और डकैतों को पनाह देते हैं, जो देश में फिरकापरस्ती फैलाते हैं और देश की अखंडता के लिए खतरा बने हुए है, जो देशद्रोही हों, अमरीका और बर्तानियां के एजेन्ट हों, इस देश के मासूम बच्चों के खुन से हाथ रंगने वाले हों और इस देश को तोड़ने वाले हों।

जहां तक गुरु की नगरी का सम्बन्ध है, मेरा बड़ा सम्बन्ध रहा है मास्टर तारासिंह जी और संत फतेहसिंह जी से। उन्होंने बड़ी लड़ाइयां लड़ीं, लेकिन उनके संघर्ष में कभी बकरी का कान भी नहीं काटा गया, कभी किसी आदमी की जान नहीं गई। दरबार साहब में तिब्बत से आए शरणार्थी बसते थे। हर मज़लूम आदमी वहां जाकर बसता था। लाखों आदमियों के लिए लंगर होता था। लोगों को हरमंदर साहब में श्रद्धा है, लेकिन वे वहां जाते हुए डरते हैं कि या तो रास्ते में पुलिस वाले पिटाई कर देंगे और अगर उनसे बच गए, तो खालिस्तानी अच्छी मरम्मत कर देंगे।

जुल्म दोनों तरफ से बढ़ रहा है। मैं आज एक फैसला चाहता हूं। गृह मन्त्री और सदन के लोग भी बहुत गुमराह होते हैं। एक मुंह में तीन ज़बानें ? दो ज़बान वाले तो बहुत बैठे हैं, बड़े नेता हैं, अड़ोस-पड़ोस में भी बैठे हैं, लेकिन तीन ज़बान के आदमी भी हैं, जो राजस्थान में जायें तो कुछ, (**व्यवधान**) मेरी एक ही जबान है, एक ही बात कहता हूं।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : (नई दिल्ली) मगर एक ज़बान भी ज़रा सम्भल कर चलनी

चाहिए। एक ज़बान भी गड़बड़ कर सकती है। ज्यादा देशभक्ति का ठेका मत लीजिए।

श्री मनीराम बागड़ी : ज्यादा नहीं, आपसे कम। अरे, जिसके पास तीन ज़बान हों उससे ज्यादा कैसे लूंगा। बहुत कम।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष जी, जिस तरह का भाषण हो रहा है वह पंजाब की स्थिति को सुधारने में क्या सहायक होगा ?

श्री मनीराम बागड़ी : कैसे नहीं होगा, यह तो हो ही रहा है। फिरकापरस्ती के खिलाफ हो रहा है।

कोई हिन्दू बचाओ रक्षा समिति, कोई सिख बचाओ रक्षा समिति और फिर सब समितियां और लोग इकट्ठे होकर चारों तरफ से धर्म के ठेकेदार होकर आपस में हिन्दू और सिख को लड़ाते हैं। इससे देश का कल्याण होने वाला नहीं है। सच बात कहता हूं तब तकलीफ हो जाती है। **(व्यवधान)** मैं न तो हिन्दू का ठेकेदार, न मुसलमान का ठेकेदार और न सिख का ठेकेदार···

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप तो खाली हरियाणा के ठेकेदार हैं।

श्री मनीराम बागड़ी : और न हरियाणा का ठेकेदार। मैं हरियाणा का ठेकेदार नहीं हूं। मैंने आज तक कभी भी हरियाणा के वास्ते कोई सवाल नहीं उठाया है। सीमा के सवाल पर जो लड़ते हैं वह सिर्फ आप जैसे वाजपेयी जी, बड़े आदमी ही लड़ सकते हैं, मेरे जैसा छोटा आदमी कैसे लड़ेगा। जिसके पास संघ की ताकत हो वही लड़े, मेरे पास वह ताकत कहां है जो मैं लड़ सकूं।

अब मैं आपकी खिदमत में तीन स्पष्ट बातें अर्ज करना चाहता हूं। इससे पहले मैं कुछ आंकड़े भी बता दूं पंजाब सर्विसेज़ के बारे में जिनको आप नोट कर लें। वहां कार्पोरेशन हैं सात जिनमें 86 सिख हैं और हिन्दू 14। तीन यूनिवर्सिटीज़ हैं और तीनों के वी.सी. सिख हैं, हिन्दू एक भी नहीं। लेक्चरार है 100 जिनमें हिन्दू हैं 15 और सिख हैं 85। खैर, इस बात से मेरा कोई मतलब नहीं है, कोई भी हो लेकिन फिर इनको ग्रीवांस कैसे हो गई ? इसी तरह से पुलिस कप्तान 10 हैं जिनमें 9 सिख हैं। यह हिन्दू और सिखों का सवाल नहीं है, सवाल है राजनीति का, सवाल है पालिटिक्स का। जब ये लोग खुद सरकार में थे उस वक्त भी हमारे हरियाणा का पानी दबाए रखा और हरियाणा को सताते रहे। अटलजी नाराज़ हो जाते हैं, वे हरियाणा वालों को दबाकर बात मनवा लेंगे। हम कमजोर आदमी हैं इसलिए हमारे ऊपर चढ़ जाओ। नारा यही लगाते थे, हम नहीं। हम तो एकता चाहते थे। इधर से नारा लगता था धोती टोपी यमुना पार, और उधर से नारा लगता था सिख, कड़ा, कृपाण जायेगा पाकिस्तान। हम तो आज भी एकता की बात करते हैं।

मैं गृह मन्त्री जी से बहुत स्पष्ट जानना चाहूंगा कि जिनके पास वगैर लाइसेन्स असला हैं उनसे आपने असला लिया या नहीं ? दूसरी बात मैं यह जानना चाहता हूं कि जब तक वे उग्रवादियों को पवित्र जगह से निकाल नहीं देते हैं क्या आप उनसे बातचीत करने के लिए तैयार हो जायेंगे ?

जैसे दरबार साहब में देशद्रोही खालिस्तान का दफ्तर हो और लौंगोवाल साहब उसको साफ न करें और उनको बाहर न निकालें। मैं यह कहता हूं कि क्या खुद इस सतह पर

करके उनको कानून के हवाले पेश करवाने के लिए बात करेंगे ? तीसरा—हिन्दू—सिख एकता के लिए सर्वदलीय सम्मेलन आप अमृतसर में करने का कोई रास्ता निकालेंगे ?

एक बात मैं और कहना चाहता हूं कि आप तीन नम्बर के आदमी से बात करना छोड़ दीजिए। आप किससे बात करते हैं — मशीन से। मशीन कौन — एक मशीन अलीफ का दिन, बेग, नौकर का नौकर, छठे आदमी से बात करेंगे। मैं कहता हूं कि आप सीधे बात करिए। एक मेज पर जो इनके अध्यक्ष हैं, सबको बुलाइए, इधर से भी बुलाइए और उधर से बुलाइए।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : प्रधान मंत्री जी बात करें।

श्री मनीराम बागड़ी : प्रधान मंत्री जी बात करें। मैं कब कहता हूं कि न करें प्रधान मंत्री जी के कहे बगैर तो ये कहते भी नहीं हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इधर भी बी टीम मारती है और उधर भी बी-टीम मारती है। होम मिनिस्टर की तो यह हालत है कि प्राइम मिनिस्टर के जो प्रिंसिपल सेक्रेटरी हैं, उनके पास उठ-उठ कर जाते हैं और पूछ-पूछ कर आते हैं कि क्या होगा। यह होम मिनिस्टर की दयनीय स्थिति है।

श्री हरिकेश बहादुर (गोरखपुर) : हम सब लोग गवाह हैं। इस बात को हम सब देखते हैं हम लोगों को आश्चर्य होता है कि क्यों होता है।

(**व्यवधान**)

श्री मनीराम बागड़ी : अगर होम मिनिस्टर सरकार का पहले नम्बर का आदमी नहीं है, तो सरकार का जो पहले नम्बर का आदमी हो और उनका भी पहले नम्बर का आदमी हो। पहले नम्बर के आदमी न हो तो छिड़ा-छिड़ा कर लोगों को मारिए मत। मैं एक बात और इस सदन के माध्यम से कहना चाहता हूं कि इसको रोकिए। अगर लौंगोंवाल साहब एक लाख आदमी भरती करते हैं तो क्या एक लाख आदमी किसी ओर के पास नहीं हैं। ऐसा मत करिए, उसकी नकल मत करिए। सबको रोकिए। एक लाख वालन्टियर कांग्रेस जमा करती है तो एक लाख फिर हिन्दू-रक्षा वाले करते हैं, इन प्रकार उनकी नकल से उल्टा काम होता है। उसको कन्डैम करिए। अगर मैं बुरा काम करता हूं ओर मेरे साथ आप बुरा करते हैं, तो दो बुरे होंगे एक बुरा नही होगा। जैसा अटल जी ने कहा फिरकापरस्ती से नहीं कटती है। बात उन्होंने ठीक कही थी, लेकिन वे चमक जाते हैं। जुबान एक रहनी चाहिए, जुबान दो नहीं रहनी चाहिए।

श्री प्रकाश चन्द्र सेठी : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य, श्री बागड़ी जी ने जो विचार व्यक्त किए हैं, उसके बारे में कोई दो राय व्यक्त करने का सवाल नहीं है। इस देश में हम सब अमन चाहते हैं, फिरकापरस्ती नहीं चाहते हैं। जहां तक उन लोगों का सवाल है, मैं एक बात कालिंग एटेंशन के सिलसिले में साफ कर देना चाहता हूं कि कालिंग एटेंशन में हरमिन्दर साहब का जिक्र है, लेकिन मैंने अपने जवाब में यह कहा है कि हरमिन्दर साहब टेम्पल काम्पलैक्स में ज़रूर है, परन्तु ये लोग गुरूनानक निवास में निवास कर रहे हैं। इसमें खास तौर से बलबीर सिंह सन्धु का जिक्र है। जहां तक हथियारों की छानबीन का प्रश्न है, इस संबंध में काफी छानबीन की गई है। अभी तक 11 हथियार जमा हुए हैं, 20 कैंसिल हुए

हैं, 6 लाइसेंस ससपैंड हुए हैं और दस केसेज इस संबंध में रजिस्टर हुए हैं। हथियारों के लाइसेंस कैंसिल करना और उनको पकड़कर डिपाजिट करवाने का काम जारी है। इस संबंध में मैं इस बात से सहमत हूं कि मैं ऐसी कोई बात नहीं करना चाहता हूं जिससे कि वहां की स्थिति खराब हो। लेकिन मैं श्री बागड़ी जी को दो बातों का आश्वासन देना चाहता हूं। यह सवाल भी यहां पार्लियामेंट में उठा है कि खतरे के नोटिस आए हैं। इस संबंध में जितने भी सुझाव दिए गए हैं, बुलैट प्रूफ कार को छोड़कर, बाकी सब इन्तजाम हम कर रहे हैं, चाहे वह सिक्योरिटी आफ लाइफ हो। इस संबंध में सारी स्टेट गवर्नमेंट को भी लिखा जा रहा है कि जहां-जहां खास तौर से चौधरी साहब जायें, वहां-वहां उनके साथ सिक्योरिटी कार चलनी चाहिए। इसके साथ ही यदि और कोई भी माननीय सदस्य, जिनको इस प्रकार का खतरा हो, हम उनको भी पूरी सिक्योरिटी देने के लिए तैयार हैं। जहां तक वहां की वायोलैंस का सवाल है, उसको, इस सदन में और पंजाब एसेम्बली में भी कंडैम किया गया है। और बार-बार इस प्रश्न पर वहां की सरकार ने भी कहा है और हमने भी कहा है कि इस प्रकार के लोगों को गुरु नानक निवास में स्थान देना चाहिये।

जहां तक हरियाणा के साथ कोई अन्याय करने का प्रश्न है, मैं माननीय सदस्य को आश्वस्त करना चाहता हूं कि बातचीत दो मुद्दों पर अटकी हुई है और वह इसलिये अटकी हुई है कि हम किसी राज्य के साथ कोई अन्याय नहीं करना चाहते हैं। जो बातें ऐसी थीं जिन को स्वीकार करने में कोई दिक्कत नहीं थी, वे स्वीकार की गई हैं, शेष बातों का निर्णय करते समय हरियाणा और राजस्थान का पूरा ध्यान रखा जायगा।

जहां तक सिख गुरुओं और उनके धर्म के आदर का प्रश्न है, हम सब लोग उनके प्रति श्रद्धा रखते हैं और उनका आदर करते हैं। हम ऐसा कोई कदम नहीं उठाना चाहते जिस की वजह से परिस्थिति और बिगड़े। हम तो यही चाहते हैं कि किसी तरह से वातावरण फिर से बातचीत लायक बने ताकि बातचीत से इन चीजों का फैसला किया जा सके।

श्री हरीश रावत (अल्मोड़ा) : अध्यक्ष जी, पंजाब की वर्तमान स्थिति के सन्दर्भ में माननीय गृह मंत्री जी ने चिन्ता व्यक्त की है वह आज न केवल गृह मंत्री जी और सरकार की चिन्ता है, बल्कि समूचे राष्ट्र की चिन्ता है।

श्री प्रकाश चन्द्र सेठी : अध्यक्ष जी, माननीय वाजपेयी जी ने जो बात कही थी, मैं उसका भी स्पष्टीकरण करना चाहता हूं। ऐसा एक भी मौका नहीं आया जब मैं ऐलेक्जेण्डर साहब के कमरे में गया हूं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : बैठक में बैठे हुए कुर्सी के पास। उनको आपके पास आना चाहिये था।

श्री प्रकाश चन्द्र सेठी : वह सी०सी०पी० ए० की मीटिंग में बैठते हैं, कान्सिल आफ मिनिस्टर्स की मीटिंग में बैठते हैं, कैबिनेट में बैठते हैं, पास में कुर्सी पर बैठना कोई गुनाह नहीं है।

श्री रघुनन्दन लाल भाटिया (अमृतसर) : वाजपेयी जी का मतलब है कि सैक्रेटरी से मत पूछो, इनसे पूछो।

श्री हरीश रावत : मैं निवेदन कर रहा था कि सरकार ने इस स्थिति को सुधारने के लिये जिस सहनशीलता, विवेक और दृढ़ता के साथ

बातचीत को चलाया है, उसकी भी सराहना की जानी चाहिये। विपक्ष के लोग भी इस बात से सहमत होंगे कि सरकार ने न केवल अपने सभी प्रयत्नों को इस में लगाया, बल्कि विपक्ष की मदद भी इस मामले को सुलझाने में ली।

12.44 hrs.

[MR. DEPUTY SPEAKER *In the Chair*]

सिख कौम और सिख धर्म हमारे देश का एक महान धर्म है और देश की स्वतन्त्रता के लिये सिखों ने जो त्याग किया हैं उसके लिये देश उनका कृतज्ञ है। उसके बाद जब भी देश पर संकट आया, विदेशी आक्रमण हुआ, पंजाब के नौजवानों ने अपना खून बहाकर देश की सीमाओं और देश के आत्म-स्वाभिमान की रक्षा की है। ये पंजाब के महान लोग थे जिन्होंने अपनी मेहनत और कर्मनिष्ठा के बल से इस देश को आर्थिक रूप से मजबूत राष्ट्र बनाया और किसी भी कौम से कम योगदान नहीं दिया।

मान्यवर, हमारे देश की यह महान परम्परा रही है कि जब भी किसी पर कोई संकट आया तो सबने मिल जुलकर उस संकट को बांटने में हाथ बटाया। जब देश का बटवारा हुआ तो उस समय सिखों और पंजाब के लोगों के ऊपर जो संकट आया, देश की जनता ने जितना भी बन पड़ा उनकी मदद की। किसी दया के फलस्वरूप नहीं, बल्कि अपना राष्ट्रीय कर्तव्य समझ कर, भाईचारे का कर्तव्य समझ कर और यही कारण है हमारे उत्तर प्रदेश के तराई के क्षेत्र में हमारे लोगों ने उस आंगन को छोड़ा और उसमें हमारे पंजाब से जो भाई विस्थापित होकर आये उनको बसाया और आज भी "रीठा" और "अमृतकुण्ड के प्रति, जो मेरे क्षेत्र के बगल में पड़ते हैं, हम उतनी ही श्रद्धा करते हैं जिस प्रकार से हमारे सिख भाई श्रद्धा करते हैं। सदन को यह जानकर आश्चर्य होगा कि "रीठा साहब" में अपने सिख भाइयों की सुविधा के लिये जो श्रद्धालु आते हैं, उनकी सुविधा के लिए उत्तर प्रदेश की सरकार ने वहां के ग़रीब लोगों के विकास के लिए जो बजट था, उसका एक बहुत बड़ा अंश खर्च किया है और आज भी वहां पर बहुत सारे काम किये जा रहे हैं। जितनी श्रद्धा गोल्डन टेम्पिल के ऊपर सिख भाइयों की हैं, उतनी ही श्रद्धा उन क्षेत्रों में चाहे वह अमृत कुंड, हिम कुंड के बगल का इलाका हो या रीठा साहब के बगल का इलाका हो, वहां के लोगों की है और वे लोग श्रद्धा से अपना मस्तक झुकाते हैं लेकिन जिस प्रकार कुछ लोग आज इस मामले को उठा रहे हैं, मैं समझता हूं कि कोई भी अकाली जो विवेकशील है, जो दूसरों के प्रभाव में आ कर काम नहीं कर रहा है, वह इस मांग का समर्थन नहीं कर सकता और इसके साथ अपने को नहीं जोड़ सकता।

मान्यवर, मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ ऐसी ताक़तें हैं जो बाहर हमारे भाई हैं, उनको भड़काकर और उनको गलतफहमी में डाल कर स्थिति को बिगाड़ना चाहती हैं और ये वही ताकतें हैं जो कभी हिन्दुस्तान को एक मज़बूत राष्ट्र के रूप में नहीं देखना चाहती थीं, ये वही ताकतें हैं जो, जब हमारा देश स्वतन्त्र हो रहा था, उस समय यह कह रही थीं कि यह देश कभी एक राष्ट्र के रूप में, एक कौम के रूप में खड़ा नहीं हो सकता। आज जब अमेरिका की सीनेट के सामने जगजीत सिंह को बुलाया जाता है पी०एल०480 के प्रभाव की जांच करने के लिए और उसके विषय में क्या कुछ हुआ है उस के सम्बन्ध में जो प्रश्न पूछे जाते हैं, तो इस देश की अखण्डता के लिए एक प्रश्नवाचक चिन्ह बन

सकता है । हम को अमेरिका की सरकार को यह साफ बता देना चाहिए कि इस तरह की हरकतें हम बर्दाश्त नहीं कर सकते । कैनाडा के अन्दर जिस तरह से खालिस्तान की मांग को प्रश्रय दिया जा रहा है, सरकार को कैनाडा की सरकार को यह साफ बताना चाहिए कि उनके यहां कैनाडा में क्यूबका में भी इसी प्रकार का एक आन्दोलन चल रहा है । हमारे यहां कोई जन आन्दोलन नहीं है लेकिन वहां पर जन आन्दोलन है । हम भी उसको समर्थन दे सकते हैं । इंग्लैंड के अन्दर बी०बी०सी० द्वारा खालिस्तान के समर्थकों को बोलने की इजाजत दी गई । सरकार को इंग्लैंड की सरकार से भी विरोध प्रकट करना चाहिए । नहीं तो, यदि वे हमारे साथ इस तरह का खिलवाड़ कर सकते हैं, तो हम भी आयरलैंड के लोगों का समर्थन कर सकते हैं ।

मैं इस विषय पर ज्यादा न कहते हुए क्योंकि आपने जो यह भावना व्यक्त की है कि कोई ऐसी बात न कही जाए, जिससे वहां की स्थिति और बिगड़े, मैं और इस सदन का प्रत्येक सदस्य आपकी इस भावना से पूर्णतया सहमत हूं । अखबारों में कुछ समाचार छपे हैं । यदि ऐसी बात है और अखबारों ने कमेंट किया है कि कृपाल सिंह, जो अकाल तख्त के हैड चुने गये हैं, उससे अकाली दल में नरम-पंथियों की विजय हुई है और लौंगोवाल साहब ने जो शपथ दिलाई है, जिसमें भिंडरवाला साहब भी शामिल हुए हैं, कि जो कुछ आदेश लोंगोवाल साहब का होगा, उसका सब लोग पालन करेंगें, हो सकता है कि यह मी एक अच्छा लक्षण हो । जो रिसेंट डैवलपमेंट पंजाब के अन्दर हुए हैं, उनको देखते हुए मैं गृह मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि इनको मद्देनजर रखते हुए क्या वे अकाली दल लोगों को पुन: वार्ता के लिए आमंत्रित करने जा रहे हैं या नही ? यदि आपने वार्ता के लिए आमंत्रित किया है, तो उनकी प्रतिक्रिया किस प्रकार की है और दूसरी बात यह है कि यह जो वार्ता होगी यदि इस वार्ता का कोई परिणाम नहीं निकलता है, तो क्या सरकार इस प्रस्ताव पर भी विचार करेगी कि एकतरफा जिस तरीके से आपने उनकी धार्मिक मांगों को स्वीकार किया है, उसी प्रकार उनकी जो और मांगें, उन में जो भी पक्ष आप उचित समझते हों, जितना भी आप स्वीकार करना चाहते हैं, उस को स्वीकार करेंगें, तो उसकी घोषणा आप करेंगे या नहीं ?

श्री प्रकाश चन्द्र सेठी : मैं माननीय सदस्य से सहमत हूं कि वहां की स्थिति को किसी भी बयान से बिगड़ने से रोकना चाहिए और जहां तक हाल ही में कुछ बयानात आए हैं, उसमें श्री लौंगोवाल के इस बयान का स्वागत करता हूं, जिसमें उन्होंने खालिस्तान की मांग का विरोध करने की बात कही है ।

दूसरे यह भी सही है कि जो उन्होंने शपथ दिलाई है, उसमें भिंडरवाला साहब ने भी शपथ ली है और इस प्रकार से वे संत लोगोंवाल की लीडरशिप को मानने के लिए इस शपथ के द्वारा रजामन्द हो गये हैं ।

PROF. N. G. Ranga (Guntur) : They have taken such a long time to say that. I am sorry to say that.

श्री प्रकाश चन्द्र सेठी : जहां तक बातचीत के लिए, वार्ता के लिए बुलाने का सवाल है, यह सारा मामला अभी विचाराधीन है ।

MR. DEPUTY SPEAKER : Yes, now Shri B.D. Singh.

SHRI MANI RAM BAGRI : About ABC...... (*Interruptions*)

MR. DEPUTY SPEAKER : Mr. Bagri, you have already taken 35 minutes. Are you still not satisfied ?

SHRI MANI RAM BAGRI : The question was about BBC, that is why I wanted to add something more.

MR. DEPUTY SPEAKER : You have done maximum justice, because your name was the first on the list.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY (Bombay North East) : Maximum injustice?

MR. DEPUTY SPEAKER : No, no. Justice', I said.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : I thought, I heard 'injustice'.

MR. DEPUTY SPEAKER : No.

SHRI NIREN GHOSH (Dum Dum) : He made a speech for half an hour.

MR. DEPUTY SPEAKER : Now, Shri B.D. Singh,

श्री बी०डी० सिंह (फूलपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, पंजाब की स्थिति दिनों-दिन बदतर होती जा रही है और यह आशंका है कि यदि इस स्थिति को इसी प्रकार से चलने दिया गया तो परिणाम भयानक हो सकते हैं और देश की एकता को भी खतरा उत्पन्न हो सकता है।

मान्यवर, विडम्बना यह है कि खालिस्तान की मांग उन लोगों की तरफ से की जा रही है या हिन्दू धर्म मुर्दाबाद के नारे उन लोगों की तरफ से लगाये जा रहे हैं जिन्हें हमारे गुरुओं ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए प्रेरित किया था। मैं अपने सिख भाइयों से कहना चाहूंगा कि हिन्दू लोग भी गुरु गोविन्द सिंह जी का नाम उतने ही आदर और श्रद्धा से लेते हैं जितने कि सिख लोग लेते हैं। मैं यह मानता हूं कि सिख और हिन्दू एक रक्त और मांस हैं। यह न केवल भौतिक अर्थों में बल्कि गैर-भौतिक और आध्यात्मिक अर्थों में भी। यह बात बिल्कुल सही है।

मान्यवर, जहां तक आज के ध्यानाकर्षण प्रस्ताव का प्रश्न है, मैं कहना चाहूंगा कि खालिस्तान राष्ट्रीय परिषद् का कार्यालय गुरु नानक निवास में बराबर चल रहा है और इसको हमारे गृह मंत्री जी ने भी स्वीकार किया है। उसका तथाकथित जनरल सैक्रेटरी बलबीर सिंह संधु उसमें पिछले तीन सालों से बराबर निवास कर रहा है। उसने यह बयान दिया है कि वह समय समय पर बाहर भी घूमता रहा है। संधु ने यह बात भी कही है कि वह पिछले तीन महीनों से खालिस्तान राष्ट्रीय परिषद् के अध्यक्ष या प्रेजीडेंट जगजीत सिंह चौहान के आदेश से बाहर नहीं गया है। अब वह गुरु नानक निवास में ठहरा है।

उपाध्यक्ष महोदय, यह बात समझ में नहीं आती कि कुछ समय पूर्व जब इसी सदन में पंजाब की स्थिति पर चर्चा हो रही थी तो हमारे कई सिख भाइयों ने इस बात को कहा था कि गुरु नानक निवास स्वर्ण मन्दिर से एक अलग स्थान है, वह मन्दिर के साथ नहीं आता और वह एक तरह से होटल या कहिए धर्मशाला जैसा है और वहां कुछ लोग निवास करते हैं, वहां पर पुलिस के जाने से मंदिर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। जब हमारे सिख भाइयों ने इस विचार को व्यक्त किया तो फिर जो अपराधी या विघटनकारी तत्व वहां पर शरण ले रहे हैं, उनको पकड़ने की व्यवस्था पुलिस के द्वारा क्यों नहीं होती ?

उपाध्यक्ष महोदय, यह हमारा धर्मनिरपेक्ष देश है, राष्ट्र है और सरकार को सभी धर्मों को समान निगाह से देखना चाहिए। लेकिन

यह बड़ी शंका उत्पन्न हो जाती है और यह विषय बड़ा गंभीर हो जाता है जब कुछ लोग धर्म के नाम पर लोगों में भेदभाव, घृणा की भावना उत्पन्न करते हैं और फिर वे सरकार से विशेष सुविधाएं प्राप्त करते हैं मैं मंत्री महोदय से जानना चाहूंगा कि भारत अनेक धर्मो का संघ है, उनके जो पूजा गृह हैं उनमें यदि कोई अराजक तत्व शरण लेते हैं तो उनको पुलिस गिरफ्तार करेगी या नहीं ? यह बड़ा गंभीर प्रश्न है। किसी विशेष धर्म स्थान के साथ कोई विशेष बात लागू हो और दूसरे धर्म स्थानों के साथ दूसरी बात लागू हो, यह बात कहां तक उचित है। जहाँ तक मैं समझता हूं कि किसी भी धर्मस्थल पर यदि अपवित्र लोग निवास करते हैं तो उससे उस पवित्र स्थान की पवित्रता भंग होती है। उनको गिरफ्तार किया जाना चाहिए।

दूसरी बात आकाशवाणी प्रसारण के बारे में है। सभी धर्मो की जो अच्छी बातें हैं, इन्सान को एक दूसरे के नजदीक लाती हैं, प्रेम भाव पैदा करती हैं, उनको अगर प्रसारित किया जाए तो ठीक है। यदि कोई धर्म विशेष अपनी बातों को आकाशवाणी से प्रसारित करवाता है, उनको यह सुविधा दी जाती है तो क्या दूसरे धर्मों की बातों को प्रसारित करने की भी सुविधा दी जाएगी ? इस तरह की मांग और लोग भी कर सकते हैं और यह एक समस्या पैदा हो जाएगी। इस बात को मंत्री जी स्पष्ट करें।

जहां तक खालिस्तान की बात है, मेरे खयाल में पिछले दिनों जब खालिस्तान के बारे में सदन में चर्चा चल रही थी तो जगजीत सिंह चौहान के बारे में कई भाइयों ने यहाँ पर कहा था कि उसको बहुत महत्व नहीं दिया जाना चाहिए। वह कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति नहीं है। इसको इग्नोर किया जाना चाहिए। लेकिन यह समस्या दिन प्रति दिन गंभीर होती चली जा रही है। हमारी सरकार ने उनका पासपोर्ट रद्द कर दिया है लेकिन इंग्लैंड की सरकार के आईडिएंटिटी सार्टीफिकेट से वह दुनिया के तमाम देशों का भ्रमण कर रहा है। जैसा कि मेरे पूर्ववक्ता साथी ने कहा है, अमरीका में भी क्या षडयंत्र हो रहा है, हमारी समझ में नहीं आता। मेरी जहां तक जानकारी है कि जगजीत सिह चौहान एम बी बी एस डाक्टर है। कृषि के बारे में इसकी कोई जानकारी नहीं है। लेकिन यू एल ए की सीनेट एग्रीकल्चर कमेटी कृषि संबंधी मामलों पर विचार विमर्श करने के लिए उसको आमंत्रित करती है। इसी आधार पर उसको बीसा दिया जाता है। वहां पर बयान आया है कि चौहान कमेटी के सामने उपस्थित नहीं हुए, बल्कि भिन्न-भिन्न स्थानों पर घूमकर सिख लोगों और अकाली दल के समर्थकों से मिलकर खालिस्तान के प्रचार संबंधी बात करते रहे। वहां पर जो संगठन बना है उसने पिछली 11 अप्रैल को सेन फ्रांसिस्कों में काउंसिल जनरल के सामने प्रदर्शन किया और 18 अप्रैल को यू एन ओ के सामने प्रदर्शन करने की योजना थी। सिक्खों के मानव अधिकारों के अपहरण के संबंध में इस तरह का जो गलत प्रचार हो रहा है उसके बारे में क्या सरकार कोई कार्यवाही करेगी। इन सवालों को लेकर सरकार इंग्लैण्ड सरकार से यू.एस.ए. से और यू०एन०ओ० से कोई बातचीत करेगी ?

13.00 hrs.

एक बात मैं अवश्य जानना चाहूंगा और वह यह कि अमृतसर की खबरों से ऐसा प्रतीत होता है कि अमृतसर ऊपर से देखने में तो शांत हैं लेकिन अन्दर ही अन्दर तनाव पूर्ण स्थिति क्यों है ? एक तरफ अकाली दल में आन्दोलनकारी

लोग बढ़ रहे हैं और दूसरी तरफ हिन्दुओं की तरफ से भर्ती हो रहे हैं। इससे तनाव का वातावरण पैदा हो रहा है। वहां के हिन्दु कहते हैं कि वहां सी०आर०पी०एफ० रहनी चाहिए और पंजाब की पुलिस नहीं होनी चाहिए। सिख लोग कहते है कि पंजाब पुलिस ही रहनी चाहिए, सी०आर०पी०एफ० नहीं। इसका गम्भीर प्रभाव वहां पड़ रहा है। वहां जो इंडस्ट्रीज चल रही है, उनमें तीस परसेन्ट रा-मेटीरीयल नहीं पहुंच पा रहा है और जो फिनीश्ड गुड्स हैं, उनका डिस्पोजल भी ठीक से नही हो रहा है। ऐसे तनाव के वातावरण में वहां विस्फोटक स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इसलिए, केन्द्रीय सरकार को बड़ी गंभीरता से इस विषय को लेना चाहिए। यह खुशी की बात है कि सरकार वहां के नेताओं के साथ फिर से वार्तालाप प्रारंभ करने की पहल कर रही है। हमारी प्रधान मंत्री, गृह मंत्री और विरोध पक्ष के लोगों को भी विश्वास में लेकर यह वार्तालाप होनी चाहिए नहीं तो दिन-प्रति-दिन आन्दोलन बढ़ता जायेगा और स्थिति भयानक होती चली जायेगी। रावी और व्यास के पानी के बंटवारे की बात 1976 में तय हो गई थी। उस समय या तो सारे पहलुओं पर विचार नहीं किया गया। अगर एक बार निर्णय लिया तो फिर ट्राइब्युनल को देने की बात क्यों मान ली। किसी के दबाव में ऐसी बात नहीं मानी जानी चाहिए। उसका बटवारा इस प्रकार हो जिससे राष्ट्र को अधिक से अधिक लाभ पहुंच सके। जो प्रदेश प्रभावित हैं, उनको भी विश्वास में लेकर कोई न कोई निर्णय लेना चाहिए।

श्री प्रकाश चन्द्र सेठी : मैं माननीय सदस्य को पहले यह बताना चाहूंगा कि बलबीर सिंह संधू 1981 के बीच से गुरू नानक निवास में गया है, अब तक वह वहां से बाहर नहीं निकला है। इसलिए, बाहर जाने का तो सवाल ही नहीं है। जहां तक दफ्तर चलाने का सवाल है, मैंने यह कहा है कि वह उस कमरे का उपयोग दफ्तर चलाने के लिए कर रहा है। इस प्रकार की कोई सूचना हमारे पास नहीं है कि वहां कोई साईन बोर्ड लगा है। जहां तक वहां की सिक्योरिटी का सवाल है, हम खुद नहीं चाहते कि हिन्दुओं और सिखों में तनाव बढ़े। इसको रोकने के लिए हम प्रयत्न कर रहे हैं। जहां तक रा-मेटीरीयल कम हो जाने का प्रश्न है, उसकी जानकारी मुझे नहीं है। माननीय सदस्य को इस बात का आश्वासन देना चाहता हूं कि इन्डस्ट्री मिनिस्टर का ध्यान अवश्य इस तरफ आकृष्ट करूंगा। जहां तक सी०आर०पी० एफ० का सवाल है, उसको कानून और व्यवस्था की स्थिति सुधारने के लिए भेजा जाता है। उसको एक ग्रुप या कुछ लोगों के कहने से वापिस बुलाने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

श्री मनीराम बागड़ी : अमरीका और ब्रिटेन के बारे में भी सवाल था।

श्री प्रकाश चन्द्र सेठी : यह विदेश मंत्रालय से संबंधित है। वे इस मामले को संबंधित सरकारों के साथ टेक-अप कर रहे हैं।

DR. SUBRAMANIAM SWAMY (Bombay North East) : Sir, this House has already had one Calling Attention Motion on the Punjab situation a little earlier, and I had occasion to speak on that also. But the passage of time has not improved the situation. In fact, on that Calling Attention the Minister gave us an assurance that the Government of India would take steps to see that the situation is brought under control, but the reports do not suggest that.

In fact, today *The Tribune* carries the story, the description of a person, who was in the hospital with an eye surgery and recovering from that. He happened to be a Nirankari. Some people went to the

hospital, threw a bomb and killed him and ran away. What does this indicate ? It indicates that there is no Government, which is the point that we made last time also. How can such a thing happen ? I do not believe that the brave Sikhs, who constitute the Akali's would be doing this. These are anti-social elements, and the anti-social elements must be feeling that they can do this sort of thing and that the Government is incompetent and would not be in a position to stop it. Therefore, here is one indication of further break-down of the Government in Punjab.

Then, reports have come in *The Economic Times* that there is a flight of capital taking place now from Punjab, from Ludhiana and other places.

People are stopping investments in Punjab and are moving out the investments to other cities. This also is a very serious report, which again shows lack of confidence in the Government that is there.

I find from the official media that there is a systematic vilification of the Akalis in this matter. I was critical of the Akalis last time because, I said they did not come out very clearly on the question of Khalistan. Now I am happy to say that their leader, Shri Longowal has given a long interview, which is published in a southern newspaper, called *The Deccan Herald*, and I would like to quote from it According to this report, the Khalistan demand and the extremism is being provoked by the Central Government, this is what he says, and the Government has to respond to this. Here is the question asked of Shri Harchand Singh Longowal, published in *The Deccan Herald* of Bangalore on Sunday, April 17, this year The question is :

> "The Akali agitation has come to be linked with a separatist movement like, for instance, Khalistan."

Shri Longowal replies :

> "First of all, let me ask you when and where did the Akali Party demand Khalistan. This demand has been raised by the Dal Khalsa (now banned), which is a creation of the Congress (I)."

This is what he says; you may not agree with it, but this is what he says Then he says :

> "I do not remember the exact date but it (Dal Khalsa) was created in the Congress Bhawan of Chandigarh sometime in 1977."

Here is the statement of Shri Longowal, which completely disowns it, Dal Khalsa, he says, in fact created it. Then he goes on to describe how this is all done, how the Dal Khalsa, with the help of the Congress (I), tried to contest the Shiromani Gurudwara Prabandhak Committee elections in March 1979.

Therefore, one is becoming suspicious of Government's inaction. It looks to be premeditated and there seems to be some vested interest for the Central Government in this kind of extremism continuing, in this kind of lawlessness continuing. Otherwise, I do not see why this Government should be in this paralysed state.

The Akalis have a very long record. They were partners with us in the Government in 1977. I know that during the days of the Emergency, while many people collapsed, the Akalis used to continue the satyagraha every day and they used to go to jail. They have a very distinguished record of fighting for the civil liberties and they are men of integrity. There was some doubt whether they were surrendering to the extremism or not, but now this interview of Shri Longowal should in fact set at rest any doubts on this score.

But I am not sure about what is the Government doing in regard to Khalistan. That is why I ask this question of the Government, because I have very grave doubts whether the Government are really taking any concrete steps.

A mention was made about Shri Jagjit Singh Chauhan, who was in the United States.

He is being given a visa. The Government has made a formal protest. Now, the Government has not made serious efforts to get him extradited; in fact, they have not made even serious efforts to get his visa cancelled. They can get his visa cancelled. I know the method. I can suggest to the Government if they do not know. Mr. Chauhan was once upon a time a member of the Communist Party. So, under the U.S. laws anybody who is......

SHRI RAMAVATAR SHASTRI (Patna): Who said ? No, he is not a member of the Communist Party.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : He was a member. This is there in their files. You do not know. You look at your own files.

SHRI RAMAVATAR SHASTRI : I have been in the CPI since long.

(*Interruptions*)

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : He does not know. I have said it last time.

(*Interruptions*)

MR. DEPUTY SPEAKER : It is all right. It is for the Government to reply.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Why should he reply on behalf of the Government. And he is replying on behalf of the Moscow Government, not even the Indian Parliament.

SHRI RAMAVATAR SHASTRI : Are you speaking in the Parliament of Moscow ?

MR. DEPUTY-SPEAKER : It is all right, Mr. Shastri, the Government will reply. He is not asking you.

SHRI RAMAVATAR SHASTRI : No, I should be given the opportunity to refute it.

(*Interruptions*)

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : I have already quoted last time the Rajendra Sarin's Report presented to the Punjab Government which has documented that the first pamphlet on Khalistan was put out under the title of the Communist Party. It is the Communist Party of India which brought out that pamphlet in 1946.

SHRI RAMAVATAR SHASTRI : On what ?

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : On Khalistan. (*Interruptions*). I have already said this in the House last time, there has been no contradiction, I am saying it again, and if you want the source, as I say, it is the Rajendra Sarin Committee Report which was submitted to the Punjab Government contains the facts.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE JADAVPUR : It is his favourite topic.

(*Interruptions*)

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Well, I have to warn the nation about the sinister activities of Communists.

(*Interrnptions*)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : ... They are the saviours of the nation.

(*Interruptions*)

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Sir, what is the matter ? I am taking the Government to task and they are getting excited. Now, they will say that they also supported the Quit India Movement. They will say that I am wrong in saying that they did not support the Quit India Movement. We know what their history is.

MR. DEPUTY SPEAKER : We are not discussing that now.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Exactly, Sir. They are dragging me into discussing it.

Mr. Chauhan was a member of the Communist Party. I say this because recently the wife of Mr. Allende, the deposed Chilean President, wanted to enter the United States, and the United States declined visa to her and the question was asked : Why ? On what grounds ? So, the argument given was that she was at one stage a member of the Communist Party. So, the same way Mr. Chauhan was also at one stage a member of the Communist Party. The Government should move the United States Government and say that 'you can't give to him. This is the argument.' Why don't you use this argument here ? But they are not making efforts. In fact it seems to me that they enjoy all that is happening because they are doing propaganda around the country that the nation is in danger and only the Congress can save it. We know how the Congress has been saving for the last three years. So, they still continue to say that the nation is in danger and people like Jagjit Singh Chauhan are actually playing their game, I would say. I won't be surprised if this man, Sandhu, who is there as Secretary General of the so-called Khalistan, is also one of their people. May be he is an employee of the RAW, I do not know. This is something which only the Government can tell me. But the impression in Punjab is that the trouble-makers in Punjab are all in their pay, are all working at their behest. Otherwise if the Government is serious, they could do something about it.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF ENERGY (SHRI CHANDRA SHEKHAR SINGH) : How wild his imagination can go ?

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Well, Sir, I will tell you about imagination. Recently I have got a call from a magazine called *The Week* published by *Malayalam Manorama* people. You must know that. They said, they wanted to verify a story. I asked, 'What is the story ?' They said, "We are bringing out a front page story of Khalistan." I said, "Wonderful. But what do you want to verify ?" They said, "We are publishing a news item to say that Kushwant Singh, Kuldip Nayyar and yourself had dinner with Zia-Ul-Haq on the 9th of March this year when he was here for the Non-Aligned Conference along with Khalistan extremists, in order to work out a plan for further trouble in Punjab." So, I said, "Well, to me the only problem is that on 9th March this year I was not in the country. But if you want, you can publish the story." Now, it turns out that when I asked the reporter where he got the story from, he said that he got it from somebody who claims to be close to the Government. Now, this kind of disinformation is going on. The same thing is about Akalis. Their name is being connected with Khalistan. Why is it so when they have denied that they have nothing to do with Khalistan ? Why is this systematic attempt being made to vilify the Akalis ? This is the question which I want to ask. The issue has arisen because of what the Secretary-General of the so-called Khalistan has said. What does the Government say ? That five cases are pending against Shri Balbir Singh Sandhu, he is wanted in five cases and he has been proclaimed offender. Now he is inside the temple. What does Shri Longowal say about this ?

> "Q. You have been accused of shielding criminals in Gurdwaras. Will you throw them out or allow the police to arrest them ?
>
> A. Please understand one thing clearly. Gurudwaras are open to every one at every time. If Mr. Darbara Singh feels that Gurudwaras are shielding criminals then he is free to investigate. A few months ago I asked Mr. Darbara Singh to give me a list of those criminals who according to the Government were hiding in the Golden Temple. He gave me six names. Three of them were of the hijackers who are in Pakistani jails."

This is Shri Darbara Singh's competence.

> "Another two were in jails elsewhere in Punjab and the sixth also not in the Golden Temple."

Now, here is the test for the Government. The Report has appeared. The

newspaper man says that he went there inside. He introduced himself. All this has been established inside. The Government says that the case is pending against him. I would like the Government first of all to ask Longowal to assist in arresting him. This is straight. I would like the Government to answer this question straight. I do not think that religious places are such that armed criminals can enter. Government says here that the entry of police in places of worship is not prohibited by law but in deference to religious sentiments, etc. etc. is it in order to continue to play your political game ? Is it because of that or is it in deference to religious sentiments ? I want to ask the Government that in the event that this gentleman who is wanted in so many cases, a proclaimed offender, if not handed over will you enter and bring him out ? Will you show that as a Government ? And here Shri Longowal will assist you. This is clear from what he has said here. Here is the time to put Akali on test, and Government itself to prove its bonafides. I suspect the Government's *bonafides*... I think there is incompetent Government in Punjab. This Government should be dismissed. There should be President's rule till normalcy is restored. Government should come honestly and present facts to the House and not try to seek political advantage out of it.

SHRI P.C. SETHI : I congratulate Shri Subramaniam Swamy on the flight of imagination to which he can go. To say that Shri Balbir Singh Sandhu is on the pay roll of the Government is the limit of the flight of imagination.

MR. DEPUTY SPEAKER : He flies very often. At least once a month he goes abroad.

SHRI P.C. SETHI : He flies very often to other countries but he should not fly to this extent.

Then he also says that in the case of Shri Chauhan also we are not very sure and we have not taken any action.

He has said about his being a Member of the Communist Party and the Government of India taking up this question with the American Government—with regard to this, this fact will have to be ascertained before the External Affairs Ministry takes any action. In this connection I would like to very clearly say that we have never said that S.G.P.C. or the Akali Dal people are behind the separatists tendency. We have been only saying that there are some people who are taking shelter in Nanak Niwas and certainly Nanak Niwas is also in the premises of the Golden Temple. It is not part of the temple itself.

As far as the names which have been supplied by the Punjab Chief Minister are concerned I would like to clarify that Shri Darbara Singh had written to Shri Tohra that Shri Balbir Singh is there. Naturally his name was there. Then Khalistan extremists Shri Ujjagar Singh Randhwa, Master Hazara Singh and Shri Satnam Singh, none of them was in Pakistan prison. These three names had come. Then he has given the name of Shri Mohinder Singh and Shri Manmohan Singh.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : When was this letter written ?

SHRI P.C. SETHI : This was written by the Chief Minister of Punjab & was dated 30-9-1981. Therefore, the information of the Hon. Member he has got with regard to the names supplied by the Punjab Chief Minister is not correct.

We are very anxious to settle the issue. It is wrong to say and accuse the Government that we want to carry on the agitation only to propagate that we alone can save the country in the present situation. This is again absolutely wrong. You can see the sort of imagination on the part of the Hon. Member.

श्री जयपाल सिंह कश्यप (आंवला) : उपाध्यक्ष महोदय, कालिंग अटेंशन के माध्यम से जिस विषय पर चर्चा हो रही है वह एक ऐसा प्रश्न

है जो देश की एकता से जुड़ा हुआ है। इसमें कोई दो रायें नहीं हैं कि सिख बंधुओं का, सिख समाज का इस देश के निर्माण में, इस देश की रक्षा में बहुत बड़ा योगदान रहा है। कृषि का मामला हो, चाहे उद्योग का मामला हो, हिन्दुस्तान के कौने-कौने में सिख भाइयों ने देश की प्रगति में जो भी योगदान दिया है वह प्रशंसनीय है। उस योगदान को हम भुला नहीं सकते। सिख इस देश के एक भाग हैं। यदि कुछ लोग आज खालिस्तान आन्दोलन की बात करें या देश के विरोध की बात करें या अराजकता की बात करें या हिंसा की बात करें तो वह कुछ बहके हुए लोगों की ही बात होगी। सिख धर्म की यह विशेषता है कि सिख भारतीय कल्चर के, हिन्दुस्तान की तहज़ीब और संस्कृति के पुजारी हैं। हम यदि विदेश जाते हैं तो अपनी तहज़ीब भूल जाते हैं, अपना पहनावा भूल जाते हैं लेकिन सिख दुनिया के हर कौने में पाए जाते है और उनके बारे में गांव-गांव में एक कहावत बन गई है कि आलू, हरिजन और सिख दुनिया के हर कौने में पाए जाते हैं लेकिन सिख कहीं भी जाते हैं, अगर बर्मा में जाए तो अपने कपड़े बदल देगा, जापान में जाए तो दूसरे ढंग की लुंगी पहन लेगा लेकिन ऊपर की पगड़ी, केश, कड़ा और कृपाण और गुरू महाराज ने जो उपदेश दिए थे, उनको कहीं पर भी बदल नहीं सकता है। वह भारतीय संस्कृति के एक बहुत बड़े प्रतीक बन गए हैं जिसको कभी भूल नहीं सकते हैं।

मेरा भी सिख धर्म से बहुत बड़ा रिश्ता है। बाबा हिम्मत सिंह पंच प्यारे—जगन्नाथपुरी से आकर गुरु महाराज को जब पंच प्यारों ने अपनी कुर्बानी दी थी, तो उन्होंने भी अमृतपान किया था भाई कन्हैया जी, जिनके लिए गुरू गोविन्द सिंह जी, दसवें गुरू ने भाई का खिताब दिया था। बाबा मोतीराम वहरा, फतहगढ़ साहब में जहाँ पर गुरू महाराज के बच्चे दीवार में चुनवाए गए थे और माता गूजरी के लिए और गुरू महाराज के दोनों बच्चों को किस तरह से छिपकर दूध पिलाने जाते थे और जब वे पकड़े गए तो नवाब ने कोल्हू में पेरवा दिया था। यह जिस तरह से हमारा रिश्ता जुड़ा हुआ है, मैं तो सोच ही नही पाता कि कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं जो हमारे टुकड़े करने की बात सोचे। अगर कुछ ऐसे बहके हुए लोग हैं तो उनको साथ लाना होगा और उनके दिमागों को बदलना होगा। आज अगर कोई ऐसी बात कहे कि खालिस्तान की बात करने वाले या देश में विघटनकारी बात करने वाले बहुत बड़ी संख्या में हैं तो उसको हम मानने के लिए तैयार नहीं हैं। पंजाब के लोगों से हमारी बातचीत होती है, हम वहां पर जाते हैं और जहां तक मैं समझता हूं यहां पर 50 या 48 फीसदी लोग गैर सिख हैं। 52 फीसदी सिख रह जाते हैं। उसमें 10 फीसदी रामगढ़िया हैं, मजहबी सिख हैं या राय सिख हैं। वे कहते हैं कि इस खालिस्तान या विघटनकारी आन्दोलन से हमारा कोई रिश्ता नहीं है। वहां पर जो पिछड़े हुए हिम्मतगढ़ी सिख है वे भी कहते है कि इस आन्दोलन से हमारा कोई रिश्ता नहीं है। बाकी दस फीसदी ऐसे सिख रह जाते हैं जिनमें 5 फीसदी ऐसे हो सकते हैं जो बहके हों और 5 फीसदी लटके हों। फिर एक या दो फीसदी ही ऐसे लोग होंगे जो विघटनकारी और खालिस्तान की बात करते हों।

सिख जाति के पंजाब और देश के लोग इस आन्दोलन के साथ नहीं हैं जब ऐसी परिस्थितियां हैं, तो इसके लिए जिम्मेदार हम रहे हैं। हो सकता है कि हम कभी डरे हों। अगर दिल्ली तक अवैध हथियारों के साथ कोई उनका आतंकवादी नेता आया है, तो हमने उसका स्वागत होने दिया है। वह बम्बई तक गया है।

हमने मजाक किया है, कभी उसको कत्ल में पकड़ा है, कभी वारन्ट काटा है, पुलिस पीछे गई है, प्रेस कान्फ्रेंस हुई है और उसको छोड़ दिया है। पकड़ा क्यों? कत्ल किया, छोड़ क्यों दिया? यह क्यों हुआ? सरकार की भुलमुल नीति है। इस कमजोर नीति का ही यह नतीजा रहा है। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि क्या गुरू महाराज ने कभी कल्पना की थी। सिखों के गुरु गुरुनानक देव हज करने के लिए जाते हैं। गुरु महाराज हरमिन्दर साहिब की बुनियाद एक सूफी सन्त न रखी थी। जिसको गुरु महाराज ढूंढकर लेकर आए हरमिन्दर साहिब की बुनियाद रखवाई थी। हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतीक इससे बड़ा और क्या हो सकता है। हज के कपड़े पहन कर गुरू महाराज हज करने के लिए जायें, इससे बड़ा हिन्दू-मुस्लिम की एकता का प्रतीक और क्या हो सकता है। राष्ट्र की धरोहर हैं और राष्ट्र के इतिहास के पन्ने हैं, लेकिन हमने दुर्भाग्य से सिखों की जो समस्यायें हैं, उन पर गम्भीरता से विचार नहीं किया। उनकी जो धार्मिक समस्यायें हैं, जिनका राष्ट्र की एकता पर प्रभाव नहीं पड़ता है, उनकी जो आर्थिक समस्यायें हैं, उन पर हमें ध्यान देना चाहिए। उनमें अलगाव की धारणा क्यों पैदा हुई, कैसे उनके दिमाग में प्रवेश हुआ इसमें कहीं न कहीं हमारी कमजोरी भी हो सकती है। इन सारी चीजों को हमें मिटाना चाहिए। राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास करना चाहिए हमें ऐसे राष्ट्रीय सम्मेलन करने चाहिए, चाहे पंजाब हो, चाहे बंगाल हो, चाहे असम हो और चाहे तमिलनाडु हो जिससे सारे प्रदेशों में राष्ट्रीय भावना बहे। राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत रहें, ऐसी भावनाओं की प्रचार करने का हमें प्रयास करना चाहिए। किसी को भी ऐसे अवसर न दें, जिससे कि मन में संशय पैदा हो। राष्ट्र की एकता सर्वोपरि है। उस राष्ट्र की एकता के लिए गुरु महाराज गुरुगोबिन्द सिंह जी ने अपने दोनों बच्चों को मैदान में शहीद किया था। चमकौर साहब की लड़ाई का वह मैदान याद आता है, जहां उनके बच्चे लड़ते-लड़ते शहीद हुए। फतेहगढ़ में बच्चे धर्म के लिए, रक्षा के लिए और देश की इज्जत के लिए दीवार में चुनवा दिए गए थे लेकिन उन्होंने उफ तक नहीं की थी। यह सब हमें याद आता है। बंदा बैरागी की याद आती है, जिसने गुरु महाराज के बच्चों का बदला लेने के लिए वहां ताण्डव नृत्य किया था। वे इतिहास के गौरव के पन्ने हैं। मैं यह पूछना चाहता हूं कि आज वहां यह स्थिति क्यों है? इस पर हमें गम्भीरता से विचार करना पड़ेगा।

इस संदर्भ में कहीं ऐसा न हो कि स्थिति बिगड़ जाए। कोई बात बिगड़ी नहीं है। केवल थोड़े प्रचार के माध्यम बढ़े हैं। विदेशी तत्व भी इसमें सक्रिय जिससे देश की एकता विघटित हो सकती। मैं एक चीज माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि आप बात करिए। उच्च स्तरीय बात होनी चाहिए। प्रथम श्रेणी की बात होनी चाहिए। लोंगोवाल साहब को मैं जानता हूं, वे इतने अच्छे लोगों में से हैं। अगर उनसे कायदे में चर्चा की जाए, बात की जाए तो किसी तरह की ऐसी कोई बात नहीं है, जो गड़बड़ हो सकें। उनको भी वही स्तर मिलना चाहिए। आप पहले स्तर की वार्ता करें। प्रधान मंत्री और लोंगोवाल साहब दोनों प्रथम श्रेणी के लोग वार्ता करें तब जाकर कुछ निर्णय निकल पाएगा। मेरा निवेदन है कि इस वार्ता को द्वितीय श्रेणी की वार्ता नहीं बनाइए प्रथम श्रेणी की वार्ता होनी चाहिए। यह दुर्भाग्य है कि इस देश में सिखों की भी विभिन्न जातियां हैं। फतेहगढ़ साहब, जहां पर कि गुरू महाराज के बच्चे शहीद हुए, हमको शिरोमणि प्रबन्धक कमेटी ने एक हजार मीटर जगह दी है, जहां

हम 40 कमरे बनाने जा रहे थे और बहुत से कमरे हमने बना लिए हैं। हर साल दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में जब मेला लगता है, हम लोग वहां जाते थे और हमारे लोगों ने लाखों रुपया इकट्ठा करके वहां पर बिल्डिंग बनानी शुरू की। लेकिन वहां भी हम जातिवाद का शिकार हुए। हमको कहा गया कि हम पंच प्यारे बाबा हिम्मत सिंह जी के साथ के हैं, पिछड़े समाज के लोग हैं। उनके एक बहुत बड़े नेता ने जो उनके अध्यक्ष भी हैं, उन्होंने हमारे उस भवन को गिरवा दिया···

श्री मनीराम बागड़ी : कौन है ?

श्री जयपाल सिंह कश्यप : तोहरा साहब। हमने पार्लियामेन्ट में भी इस मामले को उठाया, लेकिन यह कह कर कि यह राज्य का मामला है टाल दिया गया। वहां के पिछड़े वर्ग के लोग, कश्यप समाज, केवट, धीवर, मल्लाह, निषाद, चीवर समाज के लोग बहुत असन्तुष्ट हैं। उन्होंने प्रदर्शन किया, सरकार से मांग की लेकिन सरकार ने सहयोग नहीं दिया। उसके बाद हमने उनके नेता को मजबूर किया, तब पिछले साल एक हजार मीटर जगह जो जगह बाबा मोतीराम मेहरा की याद से जुड़ी हुई है उस जगह स्थान न देकर, उससे दूर दी गई। लाखों रुपया हमारा उस भवन में लगा था, लेकिन दस हजार रुपया दिया गया। अब हम दोबारा उस भवन का निर्माण कर रहे हैं, क्योंकि हम तो गुरु गोविन्द सिंह जी के उस रास्ते से जुड़े हुए हैं, और उसके लिये हमें चाहे जितना भी सताया जाय हम जुड़े रहेंगे।

अन्तिम बात मैं यह पूछना चाहता हूं—ये भगवान के इरादे, मन्दिर और मस्जिद, क्या राष्ट्र विरोधी विघटनकारी तत्वों को अपने दफ्तर चलाने के अवसर देते रहेंगे ? क्या वे वहां पर बैठकर इस तरह से काम करते रहेंगे ? इनको रोकने के लिये सरकार क्या प्रयास कर रही है ? इन पर सख्ती से प्रयास करने में सरकार क्यों कतरा रही है ? सरकार इनके खिलाफ कब से सख्त कार्यवाही प्रारम्भ करेगी ?

जहां तक सिख नेताओं से समस्याओं को लेकर राष्ट्रीय सन्दर्भ में बातचीत करने की बात है कि उच्च वार्ता आपकी सरकार किस तारीख से प्रारम्भ करेगी और कब तक लोगों-वाल साहब और अन्य नेताओं के लिये निमन्त्रण भेजे जायेंगे तथा कब तक वह बात की तारीख तय करके उस बात को चलायेगी ? क्या वह बातचीत प्रधान मंत्री के स्तर पर होगी या उनसे निचले स्तर के नेताओं के साथ होगी ?

जो लोग राष्ट्र विरोधी गतिविधियां कर रहे हैं, उनके विरुद्ध वारंट भी कटे हुए हैं, उनके खिलाफ आप क्या कार्यवाही करने जा रहे हैं ? कितनी जल्दी उन सारे अपराधियों के विरुद्ध कानून कार्यवाही प्रारम्भ करके उनको दण्डित करने का प्रयास करेंगे और उनको राष्ट्र के सामने पेश कर देंगे कि इनके ये कारनामें हैं, जो गलत हैं ?

जो विदेशी तत्व इस आन्दोलन में आग डालने की कोशिश कर रहे हैं और गलत प्रचार करने का काम कर रहे हैं, हो सकता है वे फाइनेन्स भी करते हों, क्या उन विदेशी शक्तियों, उन देशों को भी इस बात से अवगत करायेंगे कि आप अपने इन कामों को रोक दीजिये -- इसके लिये सरकार क्या कार्यवाही कर रही है या कब तक कार्यवाही को करेगी ?

क्या सरकार कोई ऐसा कानून बनाने जा रही है जिससे देश के विरुद्ध कोई ऐसे विघटन-कारी तत्व किसी भी पवित्र स्थान का प्रयोग न

कर सकें जिससे देश की एकता और ला-एण्ड-आर्डर की स्थिति बिगड़े ?

अन्त में मैं मंत्री जी से एक बात कहना चाहता हूं— हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी चरण सिंह जी को तार और धमकी भरे पत्र आये हैं। चौधरी साहब ने कहा है कि मेरा जीवन इस राष्ट्र के लिये है। मैं तो वही कहूंगा जो मेरी आत्मा कहती है। मैं राष्ट्र के हित में अपने प्राणों को दे सकता हूं, लेकिन भुकने को तैयार नहीं हूं। मैं टूट सकता हूं, लेकिन मैं माननीय मंत्री जी का अभारी हूं हम कुछ दिन पहले माननीय मंत्री जी से मिले थे और उनसे चौधरी साहब की सुरक्षा के लिये बात की थी। आपने हमारी सारी बातों को उन्हीं शब्दों में स्वीकार कर लिया, जिन शब्दों में हमने आपके सामने पेश किया था। चौधरी साहब की सुरक्षा के लिये आपने जो बन्दोबस्त किया है उसके लिये हम आपके अभारी हैं, लेकिन यहां पर बन्दोबस्त का प्रश्न नहीं है। चौधरी साहब राष्ट्र की वह सम्पत्ति हैं कि अगर उनको जाने या अनजाने में कोई भी नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा तो देश के करोड़ों लोगों का मन उनके लिये बगावत करेगा।

मैं समझता हूं कि चाहे कोई सिख हो।

श्री एम० राम गोपाल रेड्डी (निजामाबाद) : दुखी होगा, यह कहिये।

श्री जयपाल सिह कश्यप : इसमें दुखी का प्रश्न नहीं है।

(व्यवधान)

श्री एम० राम गोपाल रेड्डी : यह क्या बात है, वे आपके ही नेता नहीं हैं, सबके नेता हैं।

श्री जयपाल सिह कश्यप : मैं यह कह रहा था कि ऐसी बात नहीं होनी चाहिए। सिख नेताओं के साथ बैठकर बात करनी चाहिए। जिन लोगों ने इस तरह के पत्र लिखे हैं, हो सकता है कि इसकी आड़ में कुछ दूसरे ही लोगों ने इन पत्रों को लिखा हो। इसलिए बड़े नेताओं के साथ बैठकर बात करनी चाहिए कि इस तरह से देश के वातावरण को बिगाड़ने की कोशिश न की जाए। इतना कहते हुए मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे समय दिया।

श्री प्रकाश चन्द्र सेठी : माननीय सदस्य ने जो सिख धर्म के बारे में और सिख गुरुओं के इतिहास और देश भक्ति तथा त्याग के बारे में बात कही है, मैंने पहले भी श्री बागड़ी ने जो बयान दिया था, उस समय इस बारे में अपनी पूरी सहमति प्रकट की थी और हम सब इस बात से सहमत हैं लेकिन मैं इस बात से सहमत नहीं हूं और इसका खण्डन करना चाहता हूं कि देश में सिखों के साथ कोई घटिया किस्म का व्यवहार हो रहा है। देश में आज सिखों की कौम अच्छी तरह से है और चाहे वह उद्योग में हों, चाहे खेती में हों, चाहे ट्रांसपोर्ट में हों और चाहे इंडस्ट्री में हों, हर जगह उनका बहुत अच्छा स्थान है और न केवल पंजाब में ही बल्कि पंजाब के बाहर, जहां भी सिख कौम बसी है, मैंने उनमें से किसी को भी किसी प्रकार से भिक्षावृत्ति करते हुए नहीं देखा है। वे अच्छे स्थानों पर रहते हैं और राष्ट्र ने हमेशा उनकी बहादुरी की कद्र की है।

जहां तक गुरुद्वारे में प्रवेश का प्रश्न है, मैने शुरु में ही कहा है कि इसके लिए कोई अलग से कानून बनाने का प्रश्न नहीं है। कानूनन प्रवेश करने में कोई रोक नहीं है लेकिन हम उनके धार्मिक विचारों को मान्य करते हुए उसमें प्रवेश नहीं कर रहे हैं और प्रवेश न करते हुए हमने

उससे मांग की है— मैं समझता हूं कि आज जो सदन में बहस हुई है और सदन में जो माननीय सदस्यों ने कहा है, उसको मद्देनजर रखते हुए स्वयं लोंगोंवाल साहब और वहां पर अकाल तख्त के नेता इस बात का प्रयत्न करेंगे कि इस प्रकार के जो अवांछनीय तत्व हैं, जिनको सरकार ने प्रोक्लेम्ड आफेंडर डेक्लेयर किया है या जिनके केस रजिस्टर किये हैं, उनको वे हमें दे दें और हमें उसी की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

जहां तक बातचीत का सवाल है, मैंने पहले भी कहा है कि यह प्रश्न विचाराधीन है। माननीय प्रधान मंत्री जी से अगर वे बातचीत करना चाहते हैं, उनके स्तर पर बातचीत करना चाहते हैं, तो कभी कोई आपत्ति नहीं रही है। पहले भी बातचीत की है और आयन्दा भी जरूरत पड़ेगी, तो बातचीत करने को तैयार हैं। यह कोई बहुत बड़ा प्रश्न नहीं है और हमारी तरफ से किसी प्रकार की प्रतिष्ठा का यह प्रश्न नहीं है।

13.38 hrs.

Statement Correcting reply to a Supplementary SQ No. 45 dt. 23.2.1983 regarding Communal Riots.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI NIHAR RANJAN LASKAR): While relying to a supplementary question raised by Shri A.K. Roy desiring to know whether any special court or tribunal has been set up and whether Government is going to set up a tribunal to try offenders who indulged in communal orgy in Assam and whether any offender has been punished so far, I had inadvertently mentioned that "So far as setting up of the tribunal is concerned, in Bihar, we have appointed a tribunal to go into this," However, the correct position is that the Patna High Court, on the request of the Government of Bihar, has ear-marked three Judicial courts to try offences connected with communal incidents. Accordingly, the reply given may be corrected to read as follows :— "So far as setting up of special courts are concerned, in Bihar, the Patna High Court, on the request of the State Government, has ear-marked three Judicial courts for expeditious hearings of cases in connection with communal riots."

13.39 hrs.

Statement re : Setting up of a National Committee on the Celebration of Birth Centenary of Shri Nand Lal Bose.

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRIES OF EDUCATION AND CULTURE AND SOCIAL WELFARE (SHRI P.K. THUNGON) :

The Birth Centenary of Shri Nand Lal Bose, a prominent Indian Artist, painter falls on 3rd December 1983. In order to celebrate the great occasion in a befitting manner, a National Committee has been constituted under the Chairmanship of Hon'ble Prime Minister Smt. Indira Gandhi. The composition of the National Committee is as under :—

1.	Smt. Indira Gandhi Prime Minister of India.	Chairman
2.	Smt. Sheila Kaul, Minister of State in the Ministry of Education & Culture.	Member